प्रमुख बीमारियाँ एवं उनका निदान

जड़ गलन

कपास की जड़ों के आसपास उचित जल निकासी रखें। बीमारी का प्रकोप होने पर 250 ग्राम ब्लाइटोक्स (कॉपरअक्सीक्लोराइड 50% WP) या फोलिक्योर (टेबुकोनाजोल 25.9% ई.सी) 100–150 मिलीलीटर, उपरोक्त दवा में से किसी एक दवा का 150 लीटर पानी प्रति एकड़ के हिसाब से मिलाकर छिड़काव करें।

बैक्टीरियल ब्लाइट / जीवाणु झुलसा

कपास में जीवाणु झुलसा की रोकथाम के लिए काट दें (हटा दें)। 15 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन +250 ग्राम कॅपरऑक्सीक्लोराइड (प्रति एकड़ या 80–100 ग्राम नेटिवो (टेबुकोनाजोल 50%+ ट्राइफ्लॉक्सीस्ट्रोबिन 25% w/w WG) उपरोक्त दवा में से किसी एक दवा का 150 लीटर पानी प्रति एकड़ के हिसाब से मिलाकर छिड़काव करें।

अल्टरनेरिया पत्ता धब्बा

इसके प्रभाव से फसल में बादामी रंग के धब्बे दिखते हैं। यह ठंड के मौसम में अधिक फैलती है। इसके नियंत्रण हेतु 400 ग्राम प्रति एकड़ रिडोमिल गोल्ड 250 ग्राम या ब्लाइटोक्स (कॉपरऑक्सीक्लोराइड 50% WP), उपरोक्त दवा में से किसी एक दवा का 150 लीटर पानी प्रति एकड़ के हिसाब से मिलाकर छिड़काव करें।

लाल पत्ता

पत्ते लाल होने के बाद गिरने की समस्या का मुख्य कारण रात का तापमान अचानक कम होना या पत्तों में नाइट्रोजन व मैग्नीशियम की कमी होना है। पत्तों में नाइट्रोजन व मैग्नीशियम की कमी के नियंत्रण हेतु 1 किलोग्राम मैग्नीशियम सल्फेट +150 ग्राम यूरिया को 150 लीटर पानी प्रति एकड़ के हिसाब से मिलाकर छिड़काव करें।

चुनाई का सही समय व तकनीक

कपास के टिण्डों पर धूप वाले दिन चुनाई करें। देरी से चुनाई करने पर टिण्डे खुल जाते हैं व उसकी गुणवत्ता खराब हो जाती है। कपास की ग्रेडिग करें तथा उसमें काली रूई या कच्ची रूई मिक्स न करें। अच्छी रूई का एक ग्रेड बनायें व उससे खराब का दूसरा ग्रेड बनायें ताकि बाजार में कपास की रूई का अच्छा मूल्य मिल सके।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

सदन बाथमः 8957648577, पुष्पेंद्र कुमारः 8505021994

खैरथल–तिजारा, राजस्थान–301404

कपास की खेती

SEHGAL FOUNDATION

परिचय

कपास एक बहुमूल्य नकदी फसल है जिसकी पैदावार उन्नत विधि द्वारा करके किसान अच्छी आमदनी ले सकता है। यह मुख्य रूप से उत्तर भारत में खरीफ में बोई जाने वाली फसल है। इसकी खेती से कपास तो मिलता ही है व साथ ही खाना बनाने के लिए लकड़ी भी मिल जाती है।

खेत की तैयारी

कपास की खेती के लिए रबी की फसल कटने के बाद गर्मी में 3 से 4 बार गहरी जुताई करें व उसके बाद कल्टीवेटर या हैरो से जुताई कर बुवाई करें। भूमि में कीड़ों व दीमक से बचाव हेतु अंतिम जुताई में प्रति एकड़ 5 किलोग्राम रीजेंट जी.आर. मिला दें।

खाद एवं उर्वरक

कपास की अच्छी फसल लेने के लिए खेत में प्रति एकड़ 120 किलोग्राम यूरिया, 35 किलोग्राम डी.ए.पी., 4 किलोग्राम जिंक, 33 किलोग्राम केमैग या 30 किलोग्राम पोटाश तथा 1 किलोग्राम बोरान का प्रयोग करें। बुवाई के समय 25 किलोग्राम यूरिया व अन्य सभी खादों को अंतिम जुताई से पहले खेत में मिला दें। शेष बची यूरिया को दो भागों में पहली सिंचाई के समय व दूसरी फूल बनते समय दें। खाद का प्रयोग हमेशा मिट्टी की जांच के बाद ही करना चाहिए।

घुलनशील खादों का प्रयोग

- कपास की फसल के अच्छे विकास के लिए टिण्डों के विकास के समय 15 दिन के अंतर पर दो बार एन. पी. के. 19:19:19 का एक किलोग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से 150 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें।
- यदि बोरान बुवाई के वक्त में नहीं दिया है तो फूल आते समय 250 ग्राम 1 एकड़ के हिसाब से 150 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें।
- फूलों से अच्छी संख्या व फूलों को झड़ने से रोकने हेतु एन. ए. ए. 4.5 प्रतिशत एस. एल. मिलीलीटर (प्लानोफिक्स) दवा 50 मिलीलीटर, प्रति एकड़ के हिसाब से 150 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें।

बीज की मात्रा एवं बुवाई का समय

कपास की बुवाई के लिए 15 अप्रैल से 31 मई तक का समय उत्तम रहता है। कपास के हाइब्रिड बीज के लिए प्रति एकड़ 900 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है। अच्छी उपज हेतु लाइन से लाइन की दूरी 60 से 100 सेंटीमीटर व पौधों की दूरी 40 से 45 सेंटीमीटर रखनी चाहिए तथा गहराई 4 से 5 सेंटीमीटर से अधिक नहीं होनी चाहिए। बुवाई बैड पर करने से अच्छी फसल होती है तथा खर्च भी कम आता है। किसान टपक सिंचाई का भी प्रयोग कर सकते हैं।

बीज की किस्में

बाजार में कपास का बीज बहुत सी प्राइवेट कंपनियों के उपलब्ध हैं, लेकिन क्षेत्र विशेष को ध्यान में रखकर निम्न प्रजातियों के बीज अच्छे पाए गए हैं। इनमें अजीत–177, 155, राशि–926, यूएस–51, 71 इत्यादि का अच्छा उत्पादन पाया गया है।

खरपतवार नियंत्रण एवं निराई गुड़ाई

कपास की बुवाई के एक माह पश्चात निराई–गुड़ाई अवश्य करनी चाहिए। इसके पश्चात दूसरी निराई–गुड़ाई डेढ़ से दो माह की अवस्था पर करें। जहां निराई–गुड़ाई सम्भव नहीं हो तो वहां बुवाई के तुरन्त बाद एवं अंकुरण से पहले 6 मिलीलीटर दवा पैण्डामिथालीन (स्टाम्प) प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़कें। प्रथम निराई–गुडाई में जहां कपास के पौधे नष्ट हो गए हैं या अंकुरण सही नहीं हुआ है तो वहां खाली जगह पर पुनः कपास के पौधे लगाएं। (बुवाई के समय कुछ पौधे पोलीथीन की थैली में तैयार करके रखें तथा इन्हें खाली जगह पर लगाएं)

सिंचाई एवं जल निकास

कपास के अच्छे उत्पादन के लिए फसल में 4 से 5 सिंचाई की आवश्यकता होती है। कपास की दो अति आवश्यक अवस्था मानी गई है जो पुष्पन अवस्था एवं टिंडे बनते समय की अवस्था है। इन अवस्थाओं के समय सिंचाई अवश्य करें।

- पहली सिंचाई : 20 से 30 दिन के बाद, यूरिया देते समय एवं गैप फिलिंग के समय
- दूसरी सिंचाई : 40 से 45 दिन के बाद, टहनियों के बनते समय
- तीसरी सिंचाई : 80 से 85 दिन के बाद, पौधे की वृद्धि के समय
- चौथी सिंचाई : 100 से 105 दिन के बाद, फूल बनते समय
- पांचवी सिंचाई : 120 से 125 दिन के बाद, डेडू बनते समय

प्रमुख कीट एवं उनका उपचार

दीमक

दीमक का प्रकोप रेतीली जमीन में अधिक पाया जाता है। यह जड़ व जमीन के नजदीक से तने को खाती है। खड़ी फसल में इसके नियंत्रण हेतु 400 मिलीलीटर फिप्रोनिल (रिजेंट) या क्लोरोपायरीफास 20 ई. सी, 150 लीटर प्रति एकड़ के हिसाब से सिंचाई के साथ पानी में दें या अंतिम जुताई से पहले 4 किलोग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से रीजेंट डालें।

हरा माहू

माहू पत्तों से रस चूसकर नुकसान करते हैं। इसकी रोकथाम के लिए 75–100 मिलीलीटर कॅन्फीडोर (इमिडाक्लोप्रिड) 17.8% W/W) या 60–70 ग्राम एकटारा प्रति एकड़ (थायामेथोक्सम 25% WG) या 400 ग्राम लांसर गोल्ड प्रति एकड़ (ऐसीफेट 50% इमिडाक्लोप्रिड 1.5%), उपरोक्त दवा में से किसी एक दवा का 150 लीटर पानी प्रति एकड़ के हिसाब से मिलाकर छिड़काव करें।

थ्रिप्स

इसका प्रकोप अगस्त से सितम्बर माह में ज्यादा होता है। इसकी रोकथाम हेतु फिप्रोनिल 80% WG (जम्प), 20 ग्राम प्रति एकड़ या सुपर कॅन्फीडोर (इमिडाक्लोप्रिड 30.5% एस.सी.) 70–100 मिलीलीटर, उपरोक्त दवा में से किसी एक दवा का 150 लीटर पानी प्रति एकड़ के हिसाब से मिलाकर छिड़काव करें।

सफेद मक्खी

सफेद मक्खी पत्ती से रस चूसकर विषाणु रोग फैलाती है। यह कपास का सबसे घातक कीड़ा है। इसके अधिक प्रकोप होने से 60 से 70 प्रतिशत तक नुकसान देखा गया है। इसकी रोकथाम के लिए 75–100 मिलीलीटर कॅन्फीडोर (इमिडाक्लोप्रिड 17.8% W/W) या 400 ग्राम इक्का (एसिटामिप्राइड 20% एस.पी.) या 400 ग्राम, लांसर गोल्ड (ऐसीफेट 50% इमिडाक्लोप्रिड 1.5%) प्रति एकड़, 150 लीटर पानी के हिसाब से मिलाकर छिड़काव करें।

मकड़ी

मकड़ी पत्तों से रस चूसती है। इसके नियंत्रण हेतु डेलीगेट (स्पिनटोरम 120 एस.सी.) 180 मिलीलीटर प्रति एकड़ या ओबेरोन (स्पिरोमेसिफेन 240 एस. सी.) 160 मिलीलीटर प्रति एकड़, उपरोक्त दवा में से किसी एक दवा का 150 लीटर पानी प्रति एकड़ के हिसाब से मिलाकर छिड़काव करें।

कटुआ कीट

कटुआ कीट दिन में मिट्टी में छुप जाता है और रात में नुकसान करता है। इनके अधिक होने पर 500 मिलीलीटर लीथल (क्लोरोपायरीफास 20 ई.सी) प्रति एकड़ के हिसाब से सिंचाई के पानी के साथ दें।